ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(11): 83-86
www.allresearchjournal.com
Received: 10-09-2024
Accepted: 09-10-2024

गीता झा
एम0ए0 (मैथिली) स्वर्ण पदक सत्र – 2020–22 पटना विश्वविद्यालय, पटना, जे. आर. एफ. (यू.जी.सी), बिहार, भारत

Corresponding Author:
गीता झा
एम0ए0 (मैथिली) स्वर्ण पदक सत्र – 2020–22 पटना विश्वविद्यालय, पटना, जे. आर. एफ. (यू.जी.सी), बिहार, भारत

मन्त्रेश्वर झाक आत्मकथा : एक विवेचन

गीता झा

सारांश
एहि आत्मकथाक माध्यमसँ मन्त्रेश्वर झाक व्यक्तित्व हुनक जीवनशैली कार्य कुशलताक परिचय भेटैत अछि। ई छात्र जीवनक लेल बहुत उपयोगी पोथी अछि। जे छात्रकेँ संघर्षपूर्ण परिस्थितिसँ लड़बाक प्रेरणा दैत अछि। मन्त्रेश्वर झाक जीवन परिचय मिथिलाक साधारण परिवारसँ जुड़ल अछि। जे मेहनत आ कठिन परिश्रमसँ स्कूल जीवनसँ लऽ कए महाविद्यालयक शिक्षा धरि सदिखन वर्गमे प्रथम स्थान प्रथम प्राप्त कएलनि ओहिके बाद हिनक चयन सहायक प्राध्यापक रूपमे भेल पुनः हिनक चयन सिविल सेवा मे भेल जे गौरवपूर्ण जीवनीक विश्लेषण अछि।

कूटशब्द : व्यक्तित्व, प्रेरणादायक, जीवन यात्रा

प्रस्तावना
'कतेक डारिपर' वरिष्ठ साहित्यकार श्री मन्त्रेश्वर झाक अनुपम कृति थिक। जाहिमे एक साधारण परिवारमे जन्म लेनिहार लेखकक सम्पूर्ण जीवन–यात्राक विवरण अछि। एक साधारण छात्रक संघर्ष, असाधारण पद (आइ0ए0एस0) धरि कोना पहुँच जाइछ तकर व्यथा–कथा थिक ई पोथी।
'कतेक डारिपर' दृढ़ निश्चयी छात्रक सफलताक दस्तावेज थिक। विपरीत स्थितिक सामना करैत आगत जीवनक प्रति सतर्क, भावी पीढ़िक लेल प्रेरणादायी स्त्रोत थिक। श्री मन्त्रेश्वर झाक जन्म मध्य वित्तीय पंडित परिवारमे 6 जनवरी 1944 ई0 कैँ मधुबनी जिलान्तर्गत लालगंज गाममे भेल छलनि। प्रारम्भिक शिक्षा अपर प्राइमरी ई लोहना सँ आरम्भ कएलनि। ताहिक वर्णन ओ कएलनि अछि – ''हीन भावना तऽ हमरा तहियो नहि भेल छल जहिया हम गाम मे रही। पढ़ाइ–लिखाइ मे एकदम भुसकौल आ मतिसुन्न। पढ़बा लिखबाक ने कोनो अभिरूचि छल आ ने घर मे तकर ककरो बेगरते रहैक। ..... लोहना मे हमर मातृक अछि। मामाक घरक बगलक स्कूल मे हमरा बयस देखि तीसरा क्लास मे नाम लिखा देल गेल। कनिये दिनक बाद परीक्षा भेलैक। रिजल्ट दिन हमरा पता लागल जे हम सभ विषय मे फेल भऽ गेल रही। घर मे तकर कोनो प्रतिक्रिया नहि जेना धन सन।''[1]
एहि पंक्तिकेँ संदर्भित करबाक हमर अभिप्राय भावी जीवनक आइ0ए0एस0 पदाधिकारीक सहजता आ संघर्षशील जीवनक महत्तासँ अछि। जखन पढ़ि कए घूमथि आ पिता (पं0 सतीश्वर झा) माने पुछथिन तऽ ओ कहथिन – 'माने–ताने हमरा नहि बुझल अछि।' एहि पर रोज बिगड़ाइ सूनथि। मुदा धन सन। तंग आबि कए ओहू ठाम गेनाइ छोड़लथि। ताबेत जनबरी आबि गेलैक। हुनक संगी सभ जे तीसरा पास कएने रहथ, चौथामे नाम लिखयबाक लेल लक्ष्मीश्वर एकेडमी सरिसब पाही जाय लागल। मन्त्रेश्वर झाकेँ स्कूलक पैघ मैदान आ ओहि मध्य फुटबॉल खेल आकर्षित कएने छल। ओ निश्चय कएलनि जे चौथामे नाम लिखाएब। घरक लोक तैयार नहि। तखन अपन पितामहीक दरबारक एक रूपया चारि आना उपलब्ध कए एकटा दूरक पित्तीक सहयोगसँ सरिसब स्कूल मे नाम लिखा लेलनि। एहिबीचक मारितेरास उत्थान–पतनक बात कहैत क्रमशः अपन पढ़ाइक उन्नतिक बात लिखैत छथि। अष्टम वर्गमे जाइत–जाइत ओ वर्गमे प्रथम आबय लगलाह। अपन दादाक टंडेली कएनिहार दूधक मशीन चलौनिहार दोकानमे सामान बेचिनिहार जँ एतय धरि पहुँच गेलाह तँ एकरा की कहबैक? ई हुनक व्यक्तित्वक सादगीपन आ दृढ़ताक परिणामेने? द्रष्टव्य थिक हुनक ओ कथन जे हुनक महान व्यक्तित्वक परिचायक अछि।
''गामसँ स्कूलक जयबाक लेल सड़क तऽ रहैक लेकिन एकदम कच्ची। माटि आ बालु सँ भरल। जूता–चप्पल पहिरबाक तऽ प्रश्ने नै रहैक। तेँ गर्मीमे तपैत बालुपर खाली पएरे, बरसातमे, थालमे लदफदाइत खसैत–पड़ैत स्कूल पहुँची। एकटा पैंट आ एकटा कमीज रहैत छल तहिया। तकरे सँ जेना–तेना काज चलाबी। एक दिन पित्तीक संग झंझारपुर गेलहुँ ओ एकटा।

हाफशर्ट कीनि देलनि – माने सिया देलनि। तहिया हमरा लागल रहय जे हम स्वर्गारोहण कऽ रहल छी। ततेक खुशी भेल।''[2]

कहैत छैक से सादा–सादी जीवनक आ उच्च विचार मन्त्रेश्वर झा मे कूटि–कूटि कए भरल छल। संगहि कोनो कार्यकेँ तत्पर भए सम्पादित करबाक प्रवृत्ति जे हाइस्कूल सँ आरम्भ भेल, ओ अनवरत बढ़िते गेल। पिता रोज पूजा पाठ आ चानन–टीका लगबैले कहथिन, एहिलेल ओ गामक ठक्कनक उदाहरण देथिन जे ओ अही सभ कारण वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त करैए। एहिसँ त्राण पएबाक लेल मन्त्रेश्वर झा, ठक्कन सदृश फर्स्ट करबाक लेल जी–जान लगा देने रहथि जाहिसँ पिता पुनः हुनका ई सभ बात नहि कहथिन।

हिनका छात्रावस्थहिमे कविता पाठ आ वाद–विवादमे भाग लेबाक प्रवृत्ति जागि गेल छलनि। जकर संदर्भमे ओ लिखैत छथि –

''ओहि समयमे किरणजीक नेतृत्वमे विद्यापति पर्व मनयबाक धूम मचि गेल छल। पहिने सालमे एक बेर तखन सत्पाह भरि आ बादमे विद्यापति पर्व समारोह पाक्षिक मनाओल जाइ लागल छल। हमर पिता किरणजीक कहला पर अथवा स्वतः प्रेरणासँ एहि समारोहमे नियमित जाइत रहथि।''[3]

छात्र सभक लेल कविता आ वाद–विवादक आयोजन एकरे अन्तर्गत होइ। जाहिमे मन्त्रेश्वर झा पूर्ण तैयारीक संग जाथि एना कही जे साहित्यिक जीवनक बीजारोपण एही ठामसँ भेलनि। जे गाछ छात्र जीवनमे रोपल गेल ओ पठन–पाठनक उपरान्त झमटगर आ फड़सार भेल।

'कतेक डारि पर' तत्कालीन समयक इतिहास थिक। जाहिमे 1950 सँ 1970 दू दशकक सांस्कृतिक साहित्यिक एवं राजनीतिक गतिविधिक विश्वसित चित्रण भेल अछि। जखन मन्त्रेश्वर झा आइ0ए0क छात्र रहथि, ओही समय हिनक विवाहक तैयारी चलय लागल। एहि प्रसंग ओ कहैत छथि – ''हमरा मोन पड़ैए 1959–60 क घटनाजे हमरा भीतर सँ तोड़ि देने छल। भेल छल ई जे हमर पिता किछु लोकक कुचक्रमे हमर विवाह तय कऽ देने छलाह। किछु मजबूरीवश हमर स्वीकृति सेहो लऽ लेने छलाह। हम आइ0ए0 कऽ परीक्षा दए दरभंगासँ गाम गेल रही। हमर विवाह एहि शर्तपर ठीक कएल गेल छल जे हमरा भावी श्वसुर आइ0ए0/बी0ए0 मे पढ़ाइक खर्चा देताह आ बी0ए0 परीक्षाक बाद हमर विवाह होयत।''[4]

ओना ओ विवाह करबाक इच्छुक नहि रहथि। मुदा आर्थिक संकट, हुनक समक्ष छल। जाहि कारणेँ 'हँ' कहि देबय पड़ल छलनि। एहि ठाम सांस्कृतिक गतिविधिक एकटा उदाहरण भेटैत अछि–'हथधरी'। क्षेत्रीय ब्राह्मण मात्रमे 'हथधरी' प्रथाक प्रचलन छल। जाहिमे बर आ कन्या पक्षक लोक एकत्रित भऽ विवाहक निश्चय करैत छलाह। अर्थात् विवाहक स्वीकृति समाजक मध्य सम्पन्न होइत छल। बर पक्ष एहि दिन सँ वचन बद्ध भऽ जाइत छलाह। से वर्तमानमे इतिहासक वस्तु भऽ गेल अछि।

'हथधरी' कएलाक बाद विवाहसँ भागब, नव घटना छल। मुदा मन्त्रेश्वर झाजीक तर्कक आगू ककरो नहि चलल। कारण स्पष्ट छल। सासुर दिससँ कोनो आर्थिक सहयोग नहि भेटलनि आ विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल। सासुरवलाक तर्क रहनि जे विवाहक बाद हम खर्च देब। कारण खर्च देलाक बाद जँ बर विवाह नहि करताह तँ हुनक पाइ पानिमे चल जेतनि। मन्त्रेश्वरजीकेँ ई बात अखरि गेलनि आ विवाह नहि करबाक घोषणा कऽ देलनि। पारिवारिक प्रतिष्ठाक प्रश्न छल, मुदा ओ टस्सँ मस्स नहि भेलाह।

एहि संदर्भमे ओ कहैत छथि – ''अपन अन्तरात्मा कँ पुछलिऐक तँ जवाब भेटल जे सावधान मन्त्रेश्वर, अहाँ एखन आ एहेन लोकक ओहिठाम कदापि विवाह नहि करब। बस, हम घोषणा कऽ देलियैक जे हम आब विवाह नहि करब।''[5]

ई हिनक असामाजिक विरोध छल। जाहि कारणेँ पिताक आँखिसँ दहो बहो नोर बहय लगलनि। पित्ती क्रोधसँ आगि–बबूला भऽ गेलखिन। मुदा हुनक निश्चय अडिग रहल। पारिवारिक परिवेशक वर्णन करैत, लेखक ठाम–ठीम 'एग्रेसिब' देखाइत छथि। जाहिसँ बचलौ जा सकैत छल। कत्तौ–कत्तौ सत्य बात अधलाहो लगैत छैक। मुदा एहि पर कोनो टीका–टिप्पणी नहि कएल जा सकैछ। कारण लेखक निरंकुश होइत छथि। ई कतेक सरल आ सहज रहथि, तकरो दृष्टान्त देखल जाय – ''दृढ़ निश्चयी कँ भगवानों आशीर्वाद दैत छथिन। आइ0ए0क परीक्षाक बाद हमर गाम रहबाक अवधि कतेक यातना पूर्ण रहल तकर विशद वर्णन अनावश्यक। केवल हमर माय अपन कोनो आक्रोश हमरा पर व्यक्त नहि कएलनि। चुपचाप नुकाकऽ हम खाइत रही आ घरमे मुँह नुका कऽ पड़ल रहैत रही। तावत आइ0ए0क रिजल्ट आबि गेल। हम पूरा बिहार मे (पटना विश्वविद्यालय छोड़ि) टॉप कएने रही। ककरो सँ अयना माँगि अपन मुँह देखने रही जे टॉपरक मुँह केहेन होइत छैक।''[6]

हिनक एहि कथनमे घमंड लेशमात्र नहि देखाइत अछि आ संगहि अपराध बोधक सभ बात सुना जाइत अछि। एहिमे इहो स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे दृढ़ निश्चयी रहलाक बादो ओ उद्धत नहि छलाह। सौम्य व्यक्तित्वक मालिक मन्त्रेश्वर झा, गार्जियनकेँ सम्मान करैत, अपन केरियरक प्रति सभ दिन सतर्क रहलाह।

ई पटना विश्वविद्यालयमे बी0ए0मे नामांकन करबौलनि। बिहार विश्वविद्यालयक छात्र पटना विश्व विद्यालयमे नामांकन करबाबय ई पटना विश्वविद्यालयक छात्रक लेल आश्चर्यक विषय छल। तेँ ओतुक्का छात्र सभ अपन ढंगसँ 'हठ' करनि ओ तकरा एहि तरहेँ कहलनि अछि – ''अनेरो बिना कोनो बातक पटना कॉलेज सँ आइ0ए0 कऽ कऽ जे छात्र बी0ए0 मे आयल छल से हमरा सभक मैरिट पर आ नम्बर पर कटाक्ष करय। संक्षेप मे कही तँ अंग्रेजी मे गारि पढ़य। हम अड़ि जाइत रही।''[7]

वेगमयी धारकेँ चाहियो कए कियो बान्हि नहि सकैए। वेगकेँ अवरूद्ध नहि कऽ सकैए। मन्त्रेश्वर झा बढ़ैत गेलाह। पथक बाधा दूर होइत गेलनि। ओ कोनो प्रकारक हीन भावनासँ ग्रसित नहि रहलाह। सादगी भरल जीवन जीबाक इच्छा रखनिहार भला हीनभावनाक शिकार कोना होअय दरभंगासँ अयलाक बाद पटनोमे ई धोतिए पहिरथि। धोती–कुर्ता आ ताहिपर ककरो देल हाफ स्वेटर कानमे मफलर बान्हि जाड़सँ संघर्ष करथि। अपन पटना कॉलेजक छात्र जीवन स्व0 प्रभास कुमार चौधरी जे बादमे आबि मैथिली साहित्यक विख्यात कथाकार आ उपन्यासकार भेलाह, हुनक सानिध्यकेँ अपन उपलब्धि मानैत छथि। प्रभासक सम्बन्धमे ओ लिखैत छथि – ''विलक्षण व्यक्तित्व आ शाहखर्ची। ओ कतेक खर्च करथि तकर हिसाब नहि। हुनकर खर्च केवल भोजन करबामे की करयबामे रहनि आ कि सिनेमा देखबा मे आ देखेबा मे। भोरे उठि चल अबितथि आ बलजोरी लऽ जाइतथि कॉलेज कैंटीन जलखै करयबा ले। बढ़िया खास्ता कचौड़ी आ आलूक सूखी सब्जी।''[8]

मन्त्रेश्वर झाक एहि कथनमे एक महान व्यक्तित्वक परिचय भेटैत अछि। हुनक शालीनता आ निष्कलुष मोनक परिचय भेटैत अछि। डॉ0 भरत मिश्रक संदर्भमे ओ एहिना बेबाक कहि जाइत छथि। हुनकर अदम्य जिजीविषा, अद्भुत आत्मविश्वास आ ओजस्वी व्यक्तित्वक भरि–भरि प्रशंसा कएलनि अछि। मिश्रजी आन्हर रहथि, मुदा हुनक अद्भुत स्मरण शक्ति रहनि। ओ मोनमे कहियो हीनभावना नहि पोसलन्हि।

एम0ए0क परीक्षा देलाक बाद छुट्टी मे ई छपरा गेलाह। छपरा कॉलेज मे राजनीति विज्ञान विभागमे एक व्याख्याताक पद रिक्त रहैक। ओहि ठामसँ दूटा सीनियर प्रो0 डॉ0 मनोरंजन झा बी0एच0यू0 आ डॉ0 अली अशरफ जामिया मिलिया चल गेल छलाह। ओहि समय हेड रहथि डॉ0 अखौरी आ दोसर सीनीयर टीचर रहथि श्री रामाश्रय सिंह। डॉ0 अखौरी भूमिहारक प्रत्याशीक विरोधी आ सिंहजी कायस्थ प्रत्याशीक। मन्त्रेश्वर झाक ससुर न्यूट्रल लोक रहथि। तेँ दुनूक आग्रह पर हिनका छपरा कॉलेज बजा लेल गेलनि। प्राचार्य जखन हमर 'इन्टरव्यु' लैत रहथिन तऽ कहलथिन जे ओ तऽ एम0ए0 पास नहि छथि, तखन एहि पद पर

बहाल कोना हेतनि? मन्त्रेश्वर झा मात्र निर्भीक नहि प्रति उत्पन्न मस्तिष्क सेहो रखने रहथि। हुनक एहि सम्बन्धमे उत्तर छल – ''यदि हमर बहाली नहि भऽ सकैए तँ नहि करू। प्राचार्य सकदम भऽ गेलाह। हमरा दिस टुकुर–टुकुर ताकय लगलाह। तकर बाद हम अपन पक्ष रखैत कहलियनि जे अहाँ हमर मैट्रिक/आइए/बीएक रिजल्टक मूल्यांकन करू। हम एमए मे परीक्षा दऽ चुकल छी ताहि पर विश्वास करू। एम0ए0 मे जँ हमरा थर्डो क्लास भेटत तैयो हमर कुल मूल्यांकन आन सब सँ बेसी होयत। तखन अहाँ कैं जे ठीक लागय से करू।''[9]

कतेक निर्भीक आ कतेक सहज? आ ते ँ हुनक नियुक्ति छपरा कॉलेज मे भेल। एक मासक बाद एम0ए0क रिजल्ट आएल आई पुनः एम0ए0 मे सेहो टॉप कएने छलाह। पटना गेला पर कुलपति बजौलखिन आ कहलथिन–''हमरा दुःख अछि मन्त्रेश्वर जे पटना कॉलेज मे अहाँक लेल व्याख्यातक पद एखन रिक्त नहि अछि। बी0एन0 कॉलेज मे एक पद रिक्त अछि। की, अहाँ बी0एन0 कॉलेज मे काज करय चाहब?''[10]

ई बी0एन0 कॉलेज मे योगदान देलनि। मुदा ओही बीच बिहार लोक सेवा आयोगक माध्यमसँ हिनक चयन दरभंगा, भागलपुर आ गया तीनू मे सँ कोनो एकठामक लेल योगदान देबाक निमित्त कहल गेलनि। गयाक तत्कालीन हेड डॉ0 रामचन्द्र प्रसादक आग्रह पर ई गया कॉलेज मे अपन योगदान देलनि। एहि ठामक एकटा मजगर गप्पकैं रेखांकित करब आवश्यक – ''गया गेलहुँ तऽ पहिने प्रो0 उमानाथ झाक डेरा पर रहलहुँ। हुनक भरल–पुरल परिवार रहनि। खयबाकाल हमरा पूछल जाय जे आओरो किछु लेब तँ हमर अपन सोतियाइक संस्कार जागि जाय। हम कहिऐक, नहि–नहि पर्याप्त भऽ गेल। हम देखने रहिएक जे पाहुनकैं दुराग्रह कऽ कऽ खुआओल जाइत छैक। बाबूक अपन अलग व्याकरण रहनि।''[11]

भेल ई जे उमानाथ बाबू 'नहि'कैं वास्तविक 'नहि' मानि चुप भऽ जाथि आ मन्त्रेश्वर झा भुखले रहि जाथि। एकर बाद ओ माँगि कैं सभ वस्तु लेथि। गयाक गुंडा गर्दीसँ त्रस्त श्री झा आइ0ए0एस0 परीक्षामे बैसबाक निश्चय कऽ, फॉर्म भरि देलनि। नव–नव विषय रखलनि। मुदा डर एहि बातक छल जे जँ नहि भेलनि, तऽ लोक उपहास करतनि। तखनहि उमानाथ बाबूक जमाय आ हिनक सहपाठी श्री विनोद झा जे ओही साल आइ0ए0एस0 भेल छलाह, तनिक आगमन भेल। मन्त्रेश्वर जीक डरकैं दूर करबाक लेल ओ जे कहलनि से मन्त्रेश्वर झाक लेल बहुत सहारा भेल। द्रष्टव्य थिक – ''मन्त्रेश्वर अहाँ तँ सभ दिन हमरासँ नीक विद्यार्थी रहलहुँ। हमरा जखन आइ0ए0एस0 मे भऽ गेल तँ अहाँकैं किएक नहि होयत। बड्ड सुलभ छैक आइ0ए0एस0 भेनाइ। बी0ए0 पास कोर्सक प्रश्न पूछल जाइत छैक, ते ँ अहाँकैं एहि लेल बेसी तैयारी करबाक कोनो काज नहि।''[12]

कॉलेजमे प्राध्यापन करैत विनोद बाबूक वचनकैं आर्षवचन मानैत ई परीक्षा देलनि। परीक्षा नीक गेल रहनि मुदा इण्डियन नेशनमे जे रिजल्ट आएल ओहिमे हिनक रॉल नम्बर नहि रहनि। तथापि ई अग्रिम परीक्षामे बैसताह तकर मोन बना लेलनि। मुदा एही बीच देवदूत सदृश उड़ीसासँ विनोद बाबूक आगमन गया भेल आ ओ मन्त्रेश्वर झाक असफलताकैं मानै लेल तैयार नहि रहथि। इण्डियन नेशन देखि ओ कहलनि जे जकरा आइ0ए0एस0, आइ0पी0एस0, एलाइड सभ लेल चयनित कयल गेल छैक, तकर सूची एहिमे प्रकाशित नहि अछि, दोसर अखबार आनल जाय। टाइम्स ऑफ इण्डिया आनल जाय। प्रो0 जुल्फाक डेरासँ पेपर आएल। मुदा दूधक जड़क लोक मट्ठा फूकि–फूकि कए पीबैए। से मन्त्रेश्वर झाक रॉल नम्बर छपल छल। मुदा अन्तिम अंकउमे संदेह छलनि ई 5 थिक की 8, पुनः उमानाथ बाबूक डेरा पर दूरबीनसँ देखल गेल। मुदा ओ संदेह छल। वास्तवमे ओ 3 अंक छल। मन्त्रेश्वर झा आइ0ए0एस0 भऽ गेलाह।

एहि आत्मकथाक दू भाग अछि – प्रथम भाग अध्ययन आ दोसर भाग प्रशासनिक सेवाक। जकरा विभिन्न विषयक्रममे राखल गेल अछि। आइ0ए0एस0 बनबासँ पूर्व एकर दू उपशीर्षक अछि – 'मोन पाड़ैत काल' आ 'गाछ–गाछ कोन गाछ।' 'मोन पाड़ैत काल' उपशीर्षकमे नेनपन, ओकर संघर्ष आ एहि अवधिमे विभिन्न लोकक साहचर्यक कथा कहल गेल अछि। जखन कि 'गाछ–गाछ कोन गाछ' मे हुनक उच्च शिक्षाक लेल विभिन्न ठामक यात्रा–वृतांत अछि। संगहि कोन मार्ग जीवनकैं प्रशस्त करत, तकर ऊहा–पोहक कथा प्रस्तुत भेल अछि।

आइ0ए0एस0 बनबाक बाद, एक वर्षक प्रशिक्षण अवधि पूरा कऽ सात गोट आइ0ए0एस0 पटना पहुँचलाह। हिनका पूर्वेज्ञात छलनि जे हिनक पदस्थापन आरा भेलनि अछि। आरा जएबासँ पूर्व एक सप्ताह सचिवालयमे वितयबाक छलनि। एही अवधिमे सभ आइ0ए0एस0कैं एक दोसरासँ परिचय–पात भेल।

एहि परिचय–पातक सम्पूर्ण ब्यौरा आत्मकथामे आएल अछि। रमण साहेबक परामर्शकैं एतय उद्धृत करब आवश्यक लागि रहल अछि। रमण राजस्व पर्षदक सदस्य रहथि। भेटरन लोक। हुनक परामर्शमे एक सफल पदाधिकारीक कतर्व्य झलकि रहल अछि। ओ चाहैत छलाह जे मंत्रेश्वर झा अपन कार्यकालमे दक्ष पदाधिकारी रूपमे परिगणित होथि, ते ँ एहि परामर्शक महत्व बेसी अछि। द्रष्टव्य थिक– ''..... यदि कार्यालयक कार्यकलापक पूरा रहस्य जानय चाहैत छी, से अहाँ सभ कैं जानबेक चाही, तँ जरूरी होयत जे अहाँ सभ ई बिसरि जाय जे आइ0ए0एस0 असफर छी। आफिस सुपरिटेन्डेन्ट अथवा पुरनका जानकार बड़ा बाबू सभ सँ हिलमिल कऽ ओकरा सभसँ अपनापन आ मित्रता कऽ कैं सभ किछु जनबाक प्रयास करब।''[13]

उपर्युक्त श्री रामनक परामर्श नम्रकैं खसवाक डर नहि छैक, तकरा दिस इंगित करैत अछि। मन्त्रेश्वर झा पूर्वो नम्र रहथि आ एहि पदाधिकारीक परामर्श पर अमल कए यशस्वी पदाधिकारी भेलाह। ओना आरामे पदस्थापित कलक्टर बेंकट रमण साहेबक अभिभावकत्वकैं अपन व्यक्तित्वक निर्माणमे सर्वोपरि मानैत छथि। बेंकटरमण साहेबक व्यक्तित्व आ कार्यशैलीक ओ प्रशंसा कएलनि अछि। मन्त्रेश्वर झा बेंकटरमण साहेबक सहयोगक जे वर्णन कएलनि अछि से बहुत मर्मस्पर्शी अंश अछि। द्रष्टव्य थिक – '' दुनू पति–पत्नी हमरा अपन परिवारक सदस्य जकाँ राखथि। एक बेर हम सर्किट हाउसमे दुखित पड़ि गेलहुँ। टाइफाइड भऽ गेल। भेंकटरमण साहेब आ हुनकर पत्नी कैं सूचना भेटलनि तँ हमरा अपन घर लऽ गेलीह आ हमर सेवा बारी कएलनि। जखन ज्वर कम रहय तँ बड़ आग्रह कऽ कैं इडली खयबाक लेल देथि। हमरा तँ ताधरि गामक वैदगिरी बला संस्कार छल जकर मुताबिक वैद्यजी अथवा अपने घरक बाप–पित्ती कहि देथि जे ई सात दिन ठहरैवला ज्वर थिक, कि तेरहु दिन वला कि तीस दिनवला। जावत धरि ज्वर चौबीस घंटा तक उतरि नहि जाइत छलैक ता धरि बार्ली–साबूदाना छोड़ि आर कोनो आहार नहि देल जाइत छैक। हमर पितामही सभसँ नुका कैं किछु अलग खाइ लेल दऽ देथि से अलग बात। ते ँ पहिने तँ इडली खयबा मे हम आनाकानी कयलहुँ लेकिन बाद मे खाय लगलहुँ।''[14]

मन्त्रेश्वर झाक एहि वक्तव्यमे मिथिलाक प्राचीन चिकित्सा–पद्धतिक सुमार कएल गेल अछि जे समयक व्यतीत भेलासँ इतिहासक पृष्ठ बनि उभरल अछि। अपन इलाजक क्रममे परिचित भेल डॉ0 एस0एन0 मिश्रक क्रियाकलापक वर्णन, चिकित्सा क्षेत्रमे पदार्पण लेनिहार डॉक्टरक ऑखि खोलत। ते ँ ई आत्मकथा अपना संग विभिन्न विभागक कार्य–कलापक साक्षी अछि, जे एकर विशेषता थिक। संगहि आत्मकथा लिखबाक काल ओ गुण–अवगुण सभक विवेचन कएलनि अछि, जे हुनक सत्य निष्ठताक प्रमाण थिक। द्रष्टव्य थिक – ''मुदा पीबाक जे चस्का आरा मे लागल से धीरे–धीरे बढ़ैत गेल। आरा मे तँ यदा–कदा पीबी अर्थात जखन क्लब जाइ अथवा जखन वेंकटरमण साहेबक डेरा पर जाइ। तकर बाद नवादा आ पटना आ सहरसा मे लगभग छुटल रहल। बेगूसराय अबैत–अबैत फेर चालू भऽ गेल आ बढ़ैत गेल। तकर नोकसान आर तरहक तँ नहि भेल लेकिन

कतबो डाइटिंग करबाक प्रयास करैत छी–मोटापा बढ़ले जा रहल अछि।''[15]

पीबाक लत अधलाह मानल जाइत अछि आ एकर 'साइड इफेक्ट्स'क मादे लीखब, कतहुने कतहु पढ़निहारकेँ सीख देत। ते ई आत्मकथा अपनामे एक अलग गम्भीरताकेँ नुकौने अछि, ई कहब अतिशयोक्ति नहि हएत।

प्रशासनिक उठा–पटक राजनीतिक दाव–पेंच आ ताहि मध्य बेदाग निकसि जाएब, साधारण बात नहि। मन्त्रेश्वर झा सदृश ईमानदार आफीसरक लेल ई कठिन परीक्षाक समय छल। ओ जखन आरा बन्दोवस्त कार्यालयमे पदस्थापित भेलाह, तखनि कुर्मी जातिक स्थान पर राजपूत अंकित करबाक एकटा आवेदन अयलनि, तकर निष्पादनक कथा सेहो सहज, सरल शब्दमे कहल गेल अछि। नवादामे एस0डी0 ओ0 भऽ जाएब, पुनः निर्वाचनक सामना करब आ इज्जत बचा लेब, असाधारण बात होइत छैक। खास कए जातिवादी आ नक्सली इलाकामे। अपन अनुभव मे श्रीझा लिखैत छथि – ''ओहि समय डाइरेक्ट रिक्रूट आइ0ए0एस0 अफसरक बारे मे ई बात अकल्पनीय रहैक जे ओ भ्रष्ट भऽ सकैए। यदि ओकर कोनो अववाद छल तँ ओ नगण्य छल। ते ँ ताहि समय मे जँ नेता सभ अनुमण्डल पदाधिकारीक आलोचना करैक ते ई कहैक जे अमुक अधिकारी अक्षम छथि या अकर्मण्य छथि वा सुतले।''[16]

वस्तुतः पूर्वमे आइ0ए0एस0 केर अर्थ होइत छलै, इमानदार श्रेष्ठ व्यक्ति। पदक गरिमा छलैक। जे वर्तमानमे किछु अस्थिर भऽ रहल छैक। एहि सभ वर्णनक बीच–बीच साहित्यिक आ व्यक्तिगत जीवनक वर्णन भेल अछि। श्री झाक लेल जखन ओ गृह विभागमे विशेष सचिवक पद पर आसीन रहथि, तखनुक एक घटनाक वर्णन ओहिना साहस पूर्ण अछि। बिहार आरक्षी प्रमुख राजेश्वर लालक स्थानान्तरण। स्थानान्तरण सँ क्षुब्ध, क्रुद्ध सिंहकेँ पिजड़ामे बंद करबाक छल। ककरो साहस नहि होइ जे श्री लाल कैं कहिं सकय जे अहाँ कार्य भार दोसराकेँ द' दियौक। गृह सचिव श्री नाथन मन्त्रेश्वर झा सँ अनुरोध कएलथिन जे लालसँ चटर्जीकेँ कार्यभार दिएबाक दायित्व अहीं सम्हारू। एक त विभागमे नव रहथि आ ताहि पर महानिरीक्षणसँ कार्यभार दै देबाक अनुरोध, विचित्र स्थितिमे पड़ि गेलाह। हम पूर्वो कहि चुकल छी जे मन्त्रेश्वर झा साहसी मृदुभाषी एवं स्थिति प्रज्ञ लोक छलाह।

द्रष्टव्य थिक – ''हम लाल साहेबसँ शिष्टाचार भेंट करबाक लेल हुनका कार्यालय गेलहुँ। हम हुनका किछु कहितियनि ताहिसँ पहिनहि ओ सरकार आ मुख्य सचिवक विरूद्ध अपन आक्रोश उगिलय लगलाह। हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ। अन्त मे सादर हुनका कहलियनि जे सरकारक निर्णय कोना आ किएक भेलैक से हम की कहि सकैत छी। हम तँ केवल अपन दायित्वक निर्वहन करय आयल छी, तखन अहाँक इच्छा जे जे करी।''[17]

परिणाम सकरात्मक भेल। चटर्जीकेँ कार्यभार भेटि गेलनि। ई छल मन्त्रेश्वर झाक सफलता। आइ0ए0एस0 मौजमे रहैत छथि, लोकक एहि अवधारणाक खंडन करैत ई आत्म कथा बहुत रास बात कहि गेल अछि। एहि तरहक अनेक घटना एहि आत्मकथामे गुंफित अछि। जे ँ साहित्यिक, संस्कृति, राजनीतिक आ सामाजिक अनेकानेक घटनाक दस्तावेज बनि गेल अछि। साहित्य अकादमी, नई दिल्लीसँ पुरस्कृत 'कतेक डारिपर' एक पठनीय आत्मकथा थिक। जे अपन अन्तरालमे मारितेरास घटना–परिघटनाकेँ समेटने अछि।

निष्कर्ष

मैथिली साहित्यमे आत्म कथाक बहुत महत्व अछि। आत्म कथाक माध्यमसँ साहित्यकारक सम्पूर्ण जीवन यात्राक वर्णन होइत अछि। जाहिमे लेखकक समाजिक पृष्ठ भूमिक चित्रण भेटैत अछि। ई आत्मकथा मानव जीवनक उत्थानक संग–संग बौद्धिक एवं संस्कृतिक विकासक लेल सहायक अछि।

सन्दर्भ–सूची

1. कतेक डारिपर, मन्त्रेश्वर झा, शेखर प्रकाशन, पटना, द्वितीय संस्करण, 2009, पृ0 – 15
2. वएह, पृ0 – 18
3. वएह, पृ0 – 20
4. वएह, पृ0 – 9
5. वएह, पृ0 – 10
6. वएह, पृ0 – 11
7. वएह, पृ0 – 13
8. वएह, पृ0 – 21
9. वएह, पृ0 – 29, 30
10. वएह, पृ0 – 30
11. वएह, पृ0 – 31, 32
12. वएह, पृ0 – 35
13. वएह, पृ0 – 52
14. वएह, पृ0 – 53
15. वएह, पृ0 – 54
16. वएह, पृ0 – 73
17. वएह, पृ0 – 151